

## प्रस्तुतीकरण भाषण

रायल अकादमी आफ सांईसेस के प्रो. एरिक लुंडबर्ग

द्वारा प्रस्तुतीकरण भाषण

महामहिम, प्रतापी राजधिराज, बहनों और भाईयों

अर्थशास्त्री बहुत हद तक आर्थिक नीति के प्रश्नों से सम्बन्धित होते हैं कि सरकारें किस प्रकार और क्यों संकट का समाधान करने के अपने प्रयासों में लबातार देशों के अन्दर और बाहर नई जटिलताएं उत्पन्न करते हैं। विकास की विभिन्न लाइनों के विप्लेषण व्याख्या के लिए अर्थशास्त्री के प्रणाली विज्ञान और मॉडल निर्माण पर मांगें की जाती हैं। दुर्भाग्य से सामाजिक विज्ञान, उच्च आकांक्षाएं रखने के बाद भी उस स्टीकपन तक नहीं पहुंच सकते जिसकी वे आशा करते हैं। लोगों और सरकारों में योग्यताएं हैं कि वे नई जटिलताएं नए अन्तर्विरोध और विवाद उत्पन्न किए जाएं और अर्थशास्त्रियों की शक्तियों से ऊपर और परे चले जाते हैं कि प्रणाली में व्यवस्था लाई जाए।

इस वर्ष अर्थशास्त्र ये पुरस्कार विजेता मिल्टन फ्राइडमैन है। वास्तव में उसके अनुसन्धान का लक्ष्य ठीक ठीक हमारे आर्थिक विचारों की समस्त

रेजं के सब क्षेत्रों में आर्थिक नीति के अलावा सुस्पष्टता और तन्त्र लाना है जिसमें आर्थिक इतिहास, आर्थिक सिद्धांत और प्रणाली विज्ञान प्रश्न शामिल हैं।

षायद फ़ाइडमैन की अद्भूत प्रवृत्ति और प्रवृत्ति यह है कि वे प्रभावी ढंग से वर्तमान धारणाओं और पहले से स्थापित ज्ञान को प्रभावित कर सकता है और अस्तव्यस्त भी कर सकता है। हम दावा कर सकते हैं कि बहुत से क्षेत्रों में फ़ाइडमैन के प्रेरक योगदान के बिना आर्थिक अनुन्धान का विकास भिन्न होता है संभवतः वाद में ही वर्तमान मार्ग को अपनाया जाता। आर्थिक नीति पर परिचर्चा और अनुसन्धान के मार्ग को प्रभावित करने की फ़ाइडमैन की योग्यता कुछ तक हमें केनेस की याद दिलाती है। प्रभावी और कई बार वर्तमान सिद्धांतों की षक्तिषाली सरल आलोचना की पृष्ठभूमि के विरुद्ध फ़ाइडमैन ने एक भिन्न दृष्टिकोण, एक वैकल्पिक सिद्धांत को बहुधा अनुभवसिद्ध विप्लेषण की सहायता से प्रस्तुत किया है।

फ़ाइडमैन का नाम मुख्यतः मुद्रास्फीति और पुनर्जीवित सहगामी समझ के स्पष्टीकरण और धन संबंधी नीतियों की संभावनाओं में धन के महत्व के विचार के पुनर्जीवन से सम्बद्ध है। उसके माध्यम से हमने एक

षिकांगों स्कूल के रूप में अर्थव्यवस्था के स्थिरीकरण के लिए धन नियंत्रण नीति की उपस्थिति के साथ धन की भूमिका पर यह सुस्पष्ट बल इस रूप में देखा जाना चाहिए कि अर्थशास्त्री-बहुधा केयेनस के अन्तराधिकारी किस प्रकार लंबी अवधि तक व्यापार चक्रों और मुद्रस्फीति की प्रगति के विप्लेषण में धन और धन संबंधी नीतियों की लगभग पूर्ण उपेक्षा करते रहे। 1950 के दशक के आरंभ से फ्राइडमैन ने पहले के पञ्च केयनेषियन पूर्वाग्रह के विरुद्ध एक उचित प्रतिक्रिया का मार्ग प्रषस्त किया है। फ्राइडमैन के सिध्दांत और षोध प्रबन्धों पर तीव्र बहस के कारण केन्द्रीय बैंकों की आर्थिक नीतियों पर मुख्यतः यूएस और जर्मनी में पुनर्विचार हुआ। यह वास्तव में विलक्षण बात हैं। कि एक अर्थशास्त्री ने न केवल वैज्ञानिक अनुसन्धान की प्रगति पर बल्कि वास्तविक नीतियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव प्राप्त किया जैसा कि फ्राइडमैन ने।

सब प्रकार की आर्थिक नीतियों में पञ्चात पर फ्राइडमैन के अध्ययन को उसके अत्यधिक योगदानों में से एक माना जाए। यह फ्राइडमैन ही था जिसने प्रेक्षण-निर्णय और प्रभाव-पञ्चात को व्यापार चक्र की प्रगति के दौरान स्थायीकरण के लिए सही समय प्राप्त करने में पहले की मूलभूत

लेकिन अपेक्षित कठिनाइयों के लिए अभिव्यक्तियों बनाई।

फ्राइडमैन ने दिखाया है कि धन की सप्लाई में परिवर्तनों से संबंधित लंबी और परिवर्तित पञ्चताएं किस प्रकार अस्थिरकारी तरीके से काम कर सकती हैं। इन प्रेक्षणों से लिए गए उसके तीव्र रूप से विवेचित आर्थिक-राजनीतिक निष्कर्ष ये हैं कि आर्थिक नीति को सरलीकृत बनाया जाए और धन सप्लाई के लिए विकास का एक स्थायी लंबी अवधि दर रखने का लक्ष्य को कम महत्वाकांक्षी बनाया जाए। हाल ही के वर्षों में यह दृष्टिकोण, कुछ बड़े केन्द्रीय बैंकों द्वारा कुछ हद तक, स्वीकार कर लिया गया है।

फ्राइडमैन ने मुद्रास्फीति के कारणों पर वैज्ञानिक परिचर्चा के एक अन्य क्षेत्र पर अपनी छाप छोड़ी है। यह मजूरी के फैलाव और मूल्य वृद्धियों की दिशा के बारे में हैं। फ्राइडमैन पहला अर्थशास्त्री था जिसने दिखाया कि बेरोजगारी और मुद्रास्फीति की दर के बीच सरल "विनिमय" की वर्तमान मान्यता एक अस्थायी तथ्य के रूप में थोड़े समय के लिए ही बनी रहती है; लेकिन लंबी अवधि (पांच वर्षों से अधिक) तक ऐसी कोई "विनिमय" नहीं होती।

फ्राइडमैन के सिद्धांत के अनुसार, बेरोजगारी का एक स्तर जिसे

ढांढागत सन्तुलन स्तर के नीचे बनाए रखा जाता है, मूल्य औश्र मंजूरी वृद्धि के एक संचयी दर की ओर ले जाता है और ऐसा मुख्यतः आषाओं की अस्थायीकारी भूमिका के कारण होता है। मंजूरी और मूल्य निर्धारण के वर्तमान प्रतिपादन, महत्वपूर्ण पहलुओं में, मुद्रास्फीति प्रख्याषों के महत्व के बारे में फ़ाइडमैन की परिकल्पनाओं पर निर्मित होते हैं।

आर्थिक नीति की संभावनाओं के बारे में फ़ाइडमैन के निष्कर्षों का एक बड़ा भाग एक क्रियाशील बाज़ार अर्थव्यवस्था की रचनात्मक और अन्तर्निमित्त विशेषताओं में उसके उदार विष्वास पर आधारित है। इसी में से ही सरकारी अधिकारियों की इस योग्यता के बारे में नकारात्मक विचार उत्पन्न होता है कि वे बाज़ार यन्त्रीकरण में वित्तीय और नियामक नीतियों के माध्यम से हस्तक्षेप करें ताकि पूर्ण नियोजन प्राप्त किया जाए और बहुत अधिक आयातों को रोका जाए। लेकिन यह दार्शनिक और उदार राजनीतिक विष्वास का ही प्रश्न नहीं है। कई मुद्दों पर फ़ाइडमैन युक्तियुक्त विष्लेषण किया है कि प्रतिस्पर्धात्मक बाजार प्रणाली कैसे काम करती है। 1950 के दशक के आरंभ में मुक्त एक्सचेंज दरों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली के लिए नई व्यवस्था के प्रस्तावकों में फ़ाइड अग्रगणी थे। उसने समस्या को

सैध्दांतिक रूप से अध्ययन किया और साथ ही अनुभवसिद्ध साक्ष्य की तलाश भी की ताकि अनुभाग लगाया जा सके कि ऐसी प्रणाली कैसे काम करेगी। वास्तव में फ़्राइडमैन यह देखने वालों और व्याख्या करने वालों में सबसे पहला था कि अपेक्षाकृत स्थिर विनिमय दरों के होते हुए ब्रेटन बुड प्रणाली जन्दी या देर बाद भंग हो जाएगी।

विषुद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, फ़्राइडमैन का सबसे महत्वपूर्ण यह था कि उसने वर्तमान वार्षिक आय की बजाए, "स्थायी आय" के बारे में परिकल्पना की सहायता उपभोग सिद्धांत को पुनः रूप दिया और कुल उपभोग व्यय निर्धारित करने के लिए यह निर्णायक तत्व था। यहां घरेलू अस्थायी आय और अधिक स्थायी आय के बीच एक अत्यन्त लाभप्रद भेद बताया गया है; फ़्राइडमैन ने इस सिद्धांत का व्यापक सांख्यिकी सामग्री पर परीक्षण किया है और दिलचस्प परिणाम प्राप्त किए हैं। उपभोग कार्य के फ़्राइडमैन के रूपांतरण का सिद्धांत और अनुभवसिद्ध अनुसन्धान दोनों पर स्थायी प्रभाव हुआ।

उसकी बड़ी रचना "यूनाइटेडस्टेट्स का आर्थिक इतिहास 1867-1960 को फ़्राइडमैन की अत्यधिक ठोस और साथ ही साथ पथ प्रदर्शक योगदानों में

एक माना जाएगा। यही फ़ाइडमैन ने एक आर्थिक इतिहासकार के साथ सहयोग किया है। व्यापक ऐतिहासिक-सांख्यिकीय सामग्री के विस्तृत विप्लेषण पर बहुत हद तक फ़ाइडमैन की मोहर है। ऐसा कभी-कभार ही होता है कि ऐसा अनुभव प्राप्त होता है जैसाकि इस रचना में हुआ, विकासात्मक चरणों, संस्थागत परिवर्तनों के समस्त विस्तार पर विस्तृत ऐतिहासिक-सांख्यिकीय सामग्री का ब्योरेवार विप्लेषण अग्रगामी राजनीतिज्ञों और बैंकारों द्वारा किए गए बहुत से व्यक्तिगत भूमि दोनों, स्रोत सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन और प्रश्नगत जटिल सामग्री के विवेकपूर्ण और सन्तुलित आर्थिक विप्लेषण का बढ़िया समिश्रण प्राप्त होता है। शायद फेडरल रिज़र्व सिस्टम की नीति द्वारा अपनायी गई महत्वपूर्ण भूमिका विशेषतः उसकी काल्पनिक और क्रियाशील ढंग से पूरी की जांच को देखा जा सकता है जिसके द्वारा 1929 संकट बढ़ाया गया और अगामी मन्दी को गहरा बनाया गया था।

प्रो० मिल्टन फ़ाइडमैन को उनके उपभोक्ता विप्लेषण और आर्थिक इतिहास और सिध्दांत, जिसमें स्थिरीकरण नीति की जटिलता के उनके प्रेक्षण शामिल हैं, के लिए उनके योगदान के लिए अर्थशास्त्र में 1970 नोबेल

स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

प्रो० फ़ाइडमैन,

रायल अकादमी ऑफ साईंसेसे की ओर से मैं अनुरोध करता हूँ कि आप माहधिराज के कर कमलों से अपना पुरस्कार प्राप्त करें।

नोबेल लैक्चरों से, अर्थशास्त्र 1969-1980, सम्पादक अस्सार लिंडबेक, वर्ल्ड संईटिफिक पब्लिशिंग कं०, सिंगापुर, 1992.